राष्ट्रीय महिला परिषद अन्य तपशिलाबद्दल निवेदन

• राष्ट्रीय महिला परिषद •

(संकलित लेख)

'आजची स्त्री-आजची सावित्री'

'Woman Today as Savitri Reborn'

प्रथम आवृत्ती : 'श्री भगवान महावीर जयंती' : १४ एप्रिल २०२२

ISBN No. : 978-93-5626-941-5

@तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,बारामती

• संपादकाचे नाव •

प्राचार्य डॉ.चंद्रशेखर मुरुमकर

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,बारामती

• कार्यकारी संपादक •

डॉ.सीमा-नाईक गोसावी

• मुखपृष्ठ व अक्षरजुळणी •

श्री.महेश शिंदे

यशवंत एंटरप्रायजेस, शॉप नं. ११, रामराजे शॉपिंग सेंटर,

फलटण जि. सातारा. मोबाईल नंबर : ९४२०४८७०६०

• मुद्रक •

श्री.चंद्रकांत शिंदे

यशवंत ऑफसेट, नरसोबानगर, अनंत मंगल कार्यालय जवळ,

कोळकी ता. फलटण जि. सातारा. मो. ९४२२४००९५२

• प्रकाशकाचे नाव •

प्राचार्य डॉ.चंद्रशेखर मुरुमकर

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,बारामती,

या पुस्तकातील व्यक्त झालेल्या सर्वच विचारांशी संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही. या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निमाण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या आणि संपादकाच्या, लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क महाविद्यालयाने राखून ठेवले आहेत.

शुभसंदेश...

राज्यमंत्री/सा.बां.,मृद व जलसंधारण,वने,
प.दु.म.,सा.प्र./कॅम्प ऑफिस/जनरल/199/2022

राज्यमंत्री
सार्वजनिक बांधकाम
(सार्वजनिक उपक्रम वगळून)
मृद व जलसंधारण, वने
पशुसंवर्धन, दुग्धव्यवसाय विकास व
मत्स्यव्यवसाय, सामान्य प्रशासन
महाराष्ट्र राज्य
मंत्रालय, मुंबई ४०० ०३२
www.maharashtra.gov.in

दिनांक : 04/03/2022

शुभसंदेश

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीच्या तुळजाराम चतुरचंद कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, बारामती हे महाविद्याल गेल्या 59 वर्षापासून ग्रामीण भागातील विदयार्थ्यासाठी शैक्षणिक व सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रात उल्लेखनीय काम करीत आहे.

अनेक यशाची शिखरे पादाक्रांत केलेले हे महाविद्यालय म्हणूनच उत्तुंग व क्षमताशील महाविद्यालय ठरले आहे.

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ व राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान रुसा अंतर्गत महाविद्यालयातर्फे महिला सक्षमीकरण समितीच्या वतीने आयोजित राष्ट्रीय महिला परिषद महत्वाच्या विषयावर विदयार्थी संशोधकांचे लक्ष वेधीत आहे. या निमित्ताने स्त्रीयांच्या सक्सेस स्टोरीज समाजासमोर अधोरेखित व्हायला मदत होणार आहे आणि विदयार्थ्यांना यातून निश्चितच प्रेरणा मिळेल असा मला विश्वास वाटतो.

महाविद्यालयाचे प्राचार्य आणि सर्व अनेकान्त परिवाराचे मी अभिनंदन करतो.

दत्तात्रय भरणे

स्त्री मुक्ति एवं सुधार के आधारस्तंभ

डॉ.सरवदे प्रदीप रेवाण
अध्यक्ष, हिंदी विभा
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्याल
बारामती ता.बारामती, जि.पु
भ्रमणभाष : ९९२३६०११०
Email Id : pradipsarvade@gmail.com

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्के तत्र देवताः ।
यत्रैतात्सु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियः ।।"

"अर्थात जहाँ स्त्रियों की पूजा होती हैं, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रिय की पूजा नहीं होती हैं, वहाँ किए गए समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते है ।" मनुस्मृति में क गए उस श्लोक के आधार पर भारतीय समाज में नारियों को ऊँचा स्थान दिया गया है, ऐस माना जाता है । लेकिन वास्तविकता इसके बिलकुल विपरीत थी । इसी मनुस्मृति में ही नार को शूद्र माना गया था, जिसके कारण भारतीय समाज में उसे पुरूषों से निचला स्थान दिय गया था । उसे केवल वस्तु मात्र समझा गया था । उसे शिक्षा, संपत्ति, सम्मान आदि कुछ भ पाने का कोई अधिकार नहीं था । उसे शूद्र मानने के कारण व शूद्रों की तरह शोषित औ पीडित थी । वह पुरूष वर्चस्व की दासता में अपना संपूर्ण जीवन गुलामों की तरह जीने के लि अभिशप्त थी । वह केवल भोग विलास का साधन मात्र रह गयी थी । चाहे वह स्त्री सवर्ण ह या शूद्र, उसे समाज में किसी प्रकार का महत्वपूर्ण स्थान नहीं था । रूढिगत अंधःविश्वास अशिक्षा, सती प्रथा, बाल विवाह, जातिगत विवाह, बहु पत्नी विवाह जैसी परंपराओं म जकडी नारी को बंधनों से मुक्त कर उसको अपने अस्तित्व की पहचान देने का महान का महात्मा गौतम बुद्ध, महात्मा जोतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैसे महापुरूषों ने किया ।

युग-युग के बंधनों में जखडी इस नारी को पुरूष दासता से मुक्त करने का सबसे पहला प्रयास महात्मा गौतम बुद्ध ने किया । ढाई हजार वर्ष पूर्व स्त्रियों के समस्त शोषण के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले, स्त्री मुक्ति के अग्रदूत थे - सिध्दार्थ गौतम बुद्ध । उन्होंने स्त्रियों को समाज में पहली बार प्रतिष्ठा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया । जिस समय में स्त्रियों को संन्यास लेने का तथा ज्ञानार्जन करने का अधिकार नही था, ऐसे समय में महात्मा बुद्ध ने उन्हें अपने धम्म में दीक्षा देने का क्रांतिकारी कार्य किया । उन्होंने अपने संघ में सभी जाति, धर्म की स्त्रियों को प्रवेश दिया । उनके इस महान कार्य से स्त्रियों को गुलामी से मुक्त कर उनके जीवन में क्रांति लाने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया गया । भगवान बुद्ध स्त्री-पुरूष समानता के समर्थक थे । वे अपने शिष्य आनंद से कहते हैं कि, "आनंद निव्वाण की अवस्था तक पहुँचने में पुरूषों के समान स्त्रियाँ भी उती ही समर्थ हैं, ऐसा ... मत है । स्त्री-पुरूष विषमता का मै ...र्थक नहीं हूँ ।" इस तरह भगवान बुद्ध ने स्त्रियों को स्वतंत्रता, समता तथा सम्मान पूर्वक ...वन जीने का अधिकार देने का अभूतपूर्व कार्य किया था ।

महात्मा गौतम बुद्ध के पश्चात आधुनिक भारत में स्त्री स्वतंत्रता के सच्चे समर्थक ... - महात्मा जोतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले । उन्होंने जाति तथा धर्म के नाम पर ...लनेवाली मिथ्या परंपरा और उस परंपरा की दासता में गुलामों जैसा जीवन जीनेवाली ...भिशप्त स्त्रियों को मुक्त करने का महान कार्य किया । महात्मा जोतिबा फुले जी के ...ंतिकारी विचारों ने भारतीय सामाजिक इतिहास की नींव हिला दी । उनकी प्रेरणा तथा ...हनत से नारी शक्ति को गरीमा प्रदान की है । १ जनवरी, १८४८ में पूना के बुधवार पेठ में ...डकियों के लिए पहला स्कूल खोला और १५ मई को कन्या पाठशाला की स्थापना की गई । ...न्या पाठशाला में पढाने के लिए कोई भी महिला अध्यापक न मिलने पर उन्होंने अपनी पत्नी ...ावित्रीबाई फुले को पढाया । उनके इस कार्य में सावित्रीबाई फुले जी ने भी उनका साथ दिया। ...स तरह भारत में पहली स्त्री अध्यापिका होने का गौरव सावित्रीबाई फुले जी को प्राप्त हुआ । ...शिक्षा तत्कालीन समाज में जाति तथा धर्म के नाम पर चलनेवाली मिथ्या परंपरा को ही ...ारतीय समाज की सच्ची संस्कृति मानने वालों ने इन पति-पत्नी के समाज सुधार कार्य में कई ...कठिनाइयाँ निर्माण की । स्कूल में लडकियों को पढाने के लिए जानेवाली सावित्रीबाई जी पर ...ोवर तथा कीचड फेंक कर उन्हें अपमानित किया गया । फिर भी सावित्रीबाई जी ने हार नहीं ...ानी । इन सभी कठिनाइयों का सामना कर इन दोंनों ने सभी धर्म तथा जाति की स्त्रियों के ...लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए । महात्मा जोतिबा फुले जी ने लगभग १८ विद्यालयों की ...स्थापना कर, वे भारत में स्त्री शिक्षा आंदोलन के सूत्रधार बने । इनके इस क्रांतिकारी आंदोलन ...में उनकी पत्नी सावित्रीबाई जी का बहुत बडा योगदान रहा । अपनी पत्नी के महान योगदान के ...संबंध में ज्योतिबा कहते है - "अपने जीवन में मैं जो भी कर पाया हूँ, वह मेरी पत्नी ...सावित्रीबाई के सहयोग से ही हो सका है । वे काँटों भरे रास्तों में भी मेरे साथ कदम से कदम ...मिलाकर चलती रही।" फुले दंपति के कारण ही आज महिलाएँ शिक्षित हुई, आत्मनिर्भर ...होकर समता एवं सम्मान की अधिकारिणी बन गई हैं ।

भगवान गौतम बुद्ध से शुरू हुआ स्त्री मुक्ति का आंदोलन महात्मा फुले और ...सावित्रीबाई फुले जी के पश्चात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने अधिक गतिशिल बनाया । ...उन्होंने स्त्रियों में स्वाभिमान की भानवा को जगाकर अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने के ...लिए प्रेरित किया । उनकी प्रेरणा से ही दलित स्त्रियों में आत्मतेज उभर आया, जिसके कारण ...उनके हर सामाजिक आंदोलनों में वे पुरूषों के आगे रही हुई दिखाई देती है । डॉ.आंबेडकर ...स्त्री-पुरूष समानता के पक्षधर थे । वे समाज की उन्नति के लिए स्त्रियों की उन्नती को महत्व ...देते थे । इस संबंध में वे कहते है, "मैं किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगता ...हूँ कि उस समाज की स्त्रियों की कितनी प्रगति हुई है ।" उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि